B.A-II

-Dr. B. Kumar

व्यामोही विकृति या स्थिर व्यामोही विकृति
Delusional disorder or Paranoid

हिपोक्रेटस के अनुसार व्यामोही विकृति का अर्थ 'पागलपन' है। लेकिन आधुनिक मनोवैज्ञानिक ने माना कि व्यामोही विकृति रोगियो में व्यामोह की प्रधानता होती है। व्यामोह का अर्थ गलत विश्वास धारण करने से है। इस तरह के रोगियो में एक जटिल व्यामोह तंत्र विकसित हो जाता है लेकिन उसमें किसी प्रकार का भाषा तथा दैनिक-कार्यों में गड़बड़ी आदि जैसा कोइ लक्षण नहीं होता है।

कुटजिन के अनुसार- "व्यामोही विकृति, व्यामोही तंत्र में मौलिक असमानता है। वास्तव में कुछ व्यामोही तंत्र की ही सिर्फ असामान्यता होती है और सभी पहलूओं में व्यक्तित्व सामान्य दिखाई देता है।"

लक्षण (Symptoms) :- इस तरह के रोगी में निम्नांकित लक्षण दिखते हैं —

(1) व्यामोह- स्थिर व्यामोह के रोगी में व्यामोह की प्रधानता होती है। इसमे दंडात्मक व्यामोह एवम् आडम्बरी व्यामोह अधिक पाया जाता है। दंडात्मक व्यामोह मे रोगी को लगता है कि उसके कुछ जान-पहचान वाले लोग उसके पीछे पड़े हैं और उसे नुकसान पहुँचाना चाहते हैं। कभी-कभी रोगी को लगता है कि लोग उसे जान से मार देना चाहते हैं। यदि इस तरह के रोगी कहीं सेवा में रहता है तो उसे लगता है नियोक्ता उसे निलंबित करना चाहता है।

आडम्बरी व्यामोह में रोगी को लगता है कि वह बहुत बड़ा धार्मिक आदमी है या प्रधान आदमी है। किस्कर ने एक महिला रोगी का वर्णन किया है जो अपने आपको 'विश्व सुन्दरी' समझती थी और अपने ~~अच्छे~~ से सुंदर महिलाओं को भी अपने आगे कुछ नहीं समझती थी।"

② क्रमबद्ध एवं तार्किक चिंतन - इस तरह के रोगी को अपने आप पूर्ण विश्वास होता है और वे अपने विश्वास को क्रमबद्ध तरीके से व्यक्त करते हैं और बातचीत में सामान्य दीखते हैं।

③ स्थिति भ्रांति की कमी - ऐसे रोगियों को सारी जानकारी होती है कि वह कौन है, कहाँ है आदि।

④ विभ्रम की कमी - इस तरह के रोगी में विभ्रम की कमी पायी जाती है लेकिन किसी-किसी रोगी में श्रव्य विभ्रम देखने को मिलता है।

⑤ रक्षात्मक चिंतन - इस तरह के रोगी अपने अहं को मजबूत करने के लिए दूसरों के दोष का सहारा लेते हैं।

कारण :-

(i) दोषपूर्ण शिक्षण एवं विकास
(ii) विफलता एवं हीनता की भावना
(iii) संवेगिक कुसमायोजन
(iv) रक्षात्मक संरचनाओं का विलुप्तीकरण
(v) व्यक्ति का विशिष्ट प्रकार

स्किजोफ्रेनिया के उपचार -

इस तरह के रोगी को साइकिक चिकित्सा एवं व्यैक्तिक चिकित्सा द्वारा ठीक किया जा सकता है। इसके अलावा व्यवहार चिकित्सा द्वारा भी रोगी को लाभ पहुँचाया जा सकता है।